

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

खण्ड-तीन

थर्ड जेन्डर : कथा आलोचना

सम्पादक :

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

Election Commission of India
भारत निर्वाचन आयोग
VOTER ID CARD
संख्या: 123456789



अनुक्रम

	सम्पादकीय	
	प्रमोद मीणा	
	अर्द्धनारीश्वरों का नारकीय जीवन	9
	प्रो. नीरू	
	तीसरे-लिंग की संघर्ष-गाथा : यमदीप	49
	डॉ. विमलेश शर्मा	
	सपनों के बचे रहने की मुनादी का प्रतीक 'मैं भी औरत हूँ'	61
	डॉ. रमाकान्त राय	
	हाशिया से दस्तक देती और छटपटाती 'तीसरी ताली'	70
	डॉ. तारिक असलम तस्नीम	
	किन्नर कथा की हकीकत	78
	डॉ. राधेश्याम सिंह	
	हाशिए से आती चीखें और 'गुलाम मंडी'	85
	मधुरेश	
	पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा अर्थात् तीसरी सत्ता की ...	93
	प्रताप दीक्षित	
	हाशिए की दुनिया : न दैन्यं, न पलायनं	101
	आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	
	मैं क्यों नहीं : अस्तित्व की नये सिरे से पहचान	106
	प्रो. एम. शाहुल हमीद	
	किन्नर जीवन की अभिव्यक्ति : वाडामल्लि	117
	मूलचंद सोनंकर	
	हमारी कहानियाँ, हमारी बातें : अधूरी ज़िन्दगियाँ, सिसकती....	122
	प्रो. शर्मिला सक्सेना	
	किन्नर जीवन और हिंदी कहानियाँ	132
	डॉ. अल्पना सिंह	
	तीसरी सत्ता के संघर्ष की कहानियाँ	148

मैं क्यों नहीं : अस्तित्व की नये सिरे से पहचान

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

सदियों से हिजड़ा समुदाय को 'अन्य' ही नज़रिये से देखने और समझने के लिए अभ्यस्त भारतीय समाज नई सदी में यकायक हिजड़ों के प्रति संवेदनशील और जागरूक नहीं हुआ है। साहित्यकारों एवं संस्कृतिकर्मियों तथा सामाजिक संस्थाओं ने हिजड़ों के प्रति लोगों की पारम्परिक सोच को बदलने का सार्थक प्रयास किया है। सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका सर्वोपरि रही है। सर्वोच्च न्यायालय ने हिजड़ों को 'थर्ड जेण्डर' की मान्यता देकर उनके अधिकारों को रेखांकित भर नहीं किया, अपितु शासन को अपने दिये गये निर्देशों के अनुपालन के लिए ताकीद भी किया है। इस ऐतिहासिक फैसले से सत्ता-शासन और समाज की सोच में व्यापक सकारात्मक फ़र्क आया है। नये सिरे से हिजड़ा समुदाय के इतिहास को समझने की पहल शुरू हुई। महाभारत के चरित्र शिखण्डी और वृहन्नला (अर्जुन) के संदर्भ को रेखांकित किया गया। मुस्लिम शासनकाल में हिजड़ों की स्थिति को जाँचने की बात भी हमारे बौद्धिक समाज के सामने आयी। हिन्दी सिनेमा में हिजड़ों के चरित्र को प्रायः उपहास या हँसी-मज़ाक का पात्र बनाकर ही पेश किया गया है। इस सामाजिक प्रश्न पर कोई गम्भीर व रचनात्मक दृष्टि फ़िल्मकारों की हमारे सामने नहीं आयी है। सबसे बड़ी बात यह हुई कि साहित्य में थर्ड जेण्डर को विमर्श के दायरे में लाया गया। साहित्यकारों ने हिजड़ा समुदाय के दुःख-दर्द, अपमान, उपेक्षा, शोषण और जीवन की कटु सच्चाई को बिना किसी रंग-रोगन, लाग-लपेट और काल्पनिकता के, संवेदना और करुणा के विशद पाट पर चित्रित कर उनकी व्यथा-कथा से पाठकों/समाज को परिचित ही नहीं कराया, अपितु उनके प्रतिरोध को वाणी भी दी। उन्हें उनकी अस्मिता से परिचित कराया और समाज में उनके जीने लायक सम्मान और अधिकार की बहाली का प्रश्न उठाया है। एक नयी सामाजिक चेतना से प्रेरित होकर साहित्यकारों ने हिजड़ों के जीवन यथार्थ को नये सिरे से पहचाना और उनके जीवन में आये परिवर्तन को बड़ी संजीदगी से अपनी रचनाओं में उभारा है। बड़ी निर्भीकता और बेबाकी से कई रचनाकारों ने कविताएँ और कथाकृतियाँ रचीं। स्वतंत्रता पूर्व छिटपुट रचनाएँ हिजड़ों पर लिखी गयीं।